प्रश्नः

"ज़्या मृत्यु के बाद जीवन है?"

उज़्रः

सभी जानते हैं कि एक दिन सब को मरना है। सवाल यह है कि उसके बाद ज़्या होगा? या जैसे अय्यूब ने पूछा था, "यदि मनुष्य मर जाए तो ज़्या वह फिर जीवित होगा? ..." (अय्यूब 14:14)। लगभग अस्सी वर्षीय एक आदमी ने मेरे एक मित्र को बताया कि वह तो बस जाने के इंतज़ार में है। मेरे मित्र ने पूछा, "पर ज़्या आप जानते हैं कि उसके बाद आप कहां जाएंगे?" उसका जवाब था, "हां जानता हूं। मैं या तो ज़मीन के छह फुट नीचे हूंगा या फिर मुझे जला दिया जाएगा।" ज़्या उसका जवाब सही था? मौत के बाद ज़्या बस यही होता है?

लोगों को हमेशा यह उज़्मीद होती है कि मृत्यु के बाद जीवन है। 19वीं शताज़्दी के एक प्रसिद्ध नास्तिक रॉबर्ट इंगरसॉल को भी उज़्मीद थी कि मृत्यु के बाद भी जीवन बना रहता है। अपने भाई की कब्र पर उसकी प्रशंसा में उसने कहा:

> ... मृत्यु की रात में आशा एक सितारे को देखती है और ध्यान देने वाला प्रेम किसी पंख के सर सर की आवाज सुन सकता है। यहां जो सो रहा है, पास आ रही मृत्यु को इसने समझा कि इसका स्वास्थ्य लौट रहा है, आखिरी सांस इसने यही कहते हुए ली थी कि "अब मैं ठीक हूं।" शंकाओं व हठधर्म, आंसुओं और भयों के बावजूद, आइए मान लेते हैं कि असंज़्य मुर्दों के पसन्दीदा शज़्द यही थे।[1]

इंगरसॉल स्वर्ग में विश्वास रखना चाहता था। हम सब मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास करना चाहते हैं। लेकिन ज़्या हम विश्वास कर सकते हैं?

बाइबल बड़ी स्पष्टता से इस प्रश्न का उज़्र देती है। पर इससे बाइबल की शिक्षा कमज़ोर नहीं पड़ती। *मृत्यु के बाद आपके साथ घटित होने वाली बातों के विषय में बाइबल और ज़्या सिखाती है?*

इस प्रश्न का उज़र हर सज़्भव स्पष्ट बनाने के लिए, आइए सैमुएल नाम कल्पित पात्र के जीवन, मृत्यु और मृत्यु के बाद की कहानी बताते हैं। इस कहानी में याद रखें कि सैमुएल हम सब का प्रतिनिधित्व करता है।

सैमुएल का जीवन

भजनकार पूछता है, ''तो फिर मनुष्य ज़्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी ज़्या है कि तू उसकी सुधि ले ...'' (भजन संहिता 8:4)। जीवन की बात करें, तो सैमुएल ज़्या है?

उसमें आत्मा है, या वह आत्मा है। वास्तव में सैमुएल या किसी भी मनुष्य के लिए यह एक बुनियादी तथ्य है। आखिर उसे परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया था, और परमेश्वर तो आत्मा है (यूहन्ना 4:24)। इसलिए मनुष्य केवल शरीर ही नहीं बल्कि इससे *बढ़कर* है; सबसे बढ़कर यह कि वह एक आत्मिक जीव है। पौलुस मनुष्य के ''भीतरी मनुष्यत्व'' और ''बाहरी मनुष्यत्व'' दोनों से बना होने की बात करता है (2 कुरिन्थियों 4:16; तु. सभोपदेशक 12:7)।

उसकी एक शारीरिक देह भी है। पौलुस ने लिखा है, ''इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ ...'' (रोमियों 12:1)। यहां वह ''आप'' और ''आपके शरीर'' में अन्तर करता है। रोम में मसीही लोगों का सार उनके शरीरों में नहीं पाया जाता था; ''उनका'' अपने शरीरों पर नियन्त्रण था, पर ''वे'' अपने शरीर के समान नहीं थे।

उसका एक व्यज़्तित्व भी है। ''व्यज़्तित्व'' शज़्द का इस्तेमाल हम मनुष्य की मानसिक (उसकी शारीरिक बनावट के विपरीत) बनावट की पूर्णता के लिए कर रहे हैं। सैमुएल या तो मिल जुलकर रहने वाला है या चिड़चिड़ा, दयालु है या कठोर, विनम्र है या घमण्डी। उसके अनुभव, आदतों और चरित्र से पता चलता है कि वह कैसा व्यज़्ति है। उसकी विशेषताओं को जाने बिना उसे पहचानना सज़्भव नहीं है।

सैमुएल की ज़िज़्मेदारी है कि जब तक वह जीवित रहे तब तक वह परमेश्वर की और अपने साथी लोगों की सेवा करे। ज़्या वह ऐसा करता है? यह केवल उसे और परमेश्वर को ही मालूम है।

सैमुएल मृत्यु में

मृत्यु के समय सैमुएल के साथ ज़्या होता है? मृत्यु अलग होना है। याकूब 2:26 कहता है, ''निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है'' (याकूब 2:26)। जब आत्मा देह से अलग होने के लिए देह का त्याग करती है तो उसे मौत कहते हैं। मृत्यु को कपड़े बदलने अर्थात ''स्वर्गीय घर को पहनने'' के लिए ''पृथ्वी पर के घर'' को उतारने के रूप में दिखाया जाता है (2 कुरिन्थियों 5:1, 2; तु. आयतें 4, 8)।

आपका हाथ कट जाने पर आप तो आप ही रहते हैं। यदि आपके दोनों हाथ और दोनों टांगें भी कट जाएं तो भी आप ही रहेंगे। फिर मृत्यु को अपने हाथ और टांगों के कटने के रूप में नहीं बल्कि पूरी देह के कटने के रूप में देखें। जिस प्रकार एक हाथ कटने पर ''आप'' में होने वाला व्यक्ति वही रहता है, वैसे ही शरीर के नहीं रहने पर ''आप'' का व्यक्ति वही रहता है। इसी प्रकार, मृत्यु के समय प्रेम मसीह, अपना शरीर ''उतार देता'' है, परन्तु उसका अस्तित्व बना रहता है।

सैमुएल अधोलोक में

मृत्यु के तुरन्त बाद सैमुएल के साथ क्या होता है ? धनवान और लाज़र की कहानी में, धनी आदमी ''प्रतिदिन सुख विलास और धूमधाम के साथ रहता था'' जबकि लाज़र भूखा, बीमार और लाचार था। लूका 16:22-31 कहता है:

> और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाज़र को देखा। और उस ने पुकार कर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी अंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड्ढा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उस ने कहा; तो हे पिता मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उन के साम्हने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। इब्राहीम ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। उस ने कहा; नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे। उस ने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यवक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे।

पहले तो इससे हमें यह पता चल सकता है कि मृत्यु के बाद व्यक्ति कैसा होता है।

वह अभी भी एक आत्मा ही है। लाज़र और धनवान ने अपने - अपने शरीर त्याग दिए थे, परन्तु आत्मिक रूप में अभी भी उनका अस्तित्व था।

मृत्यु के बाद, व्यक्ति के पास, *एक आत्मिक देह* होती है या उसे दी जाती है। पौलुस कहता है कि मृत्यु होने पर हम बिना पहने नहीं रहेंगे, क्योंकि हमें पहनने के लिए एक

स्वर्गीय निवास मिलेगा (2 कुरिन्थियों 5:2-4)। यही बात वह "मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ आते हैं ?" (1 कुरिन्थियों 15:35) प्रश्नों का उत्ज़र देते हुए कहता है। वह लिखता है, "स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है ..." (1 कुरिन्थियों 15:44)। हमें आत्मिक देह की आवश्यकता ज़्यों पड़ेगी ? ज़्योंकि "... मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते ..." (1 कुरिन्थियों 15:50)। इसी प्रकार जो लोग मसीह के दोबारा आने के समय जीवित होंगे वे "सब बदल जाएंगे" (1 कुरिन्थियों 15:51) "ज़्योंकि आवश्यक है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले" (1 कुरिन्थियों 15:53)। इसलिए हम में से हर कोई जो मर जाता है, उसे एक आत्मिक देह मिलेगी।

मरने के बाद मनुष्य का *व्यज़्तित्व* पुराना ही रहता है। धनी आदमी और लाज़र का व्यज़्तित्व वही था जो पृथ्वी पर था। मृत्यु के बाद व्यज़्ति हवा या अस्पष्ट आत्मा नहीं बन जाता। वह स्मरण कर सकता है, उसके पास विवेक होता है, सोचने की, तर्क करने की, अहसास करने की और दुखी होने की क्षमता होती है। हमारी मृत्यु ऐसे नहीं होती कि एक व्यज़्ति के रूप में मरे और दूसरे के रूप में जी उठे। मृत्यु के बाद, हम वही होंगे जो आज हैं।

इस कहानी से हमें पता चलता है कि मृत्यु के बाद व्यज़्ति कहां जाता है। यह कहानी न्याय के बाद के किसी समय की बात नहीं है ज़्योंकि पृथ्वी पर जीवन अभी भी चल रहा था; धनी आदमी के पांच भाई अभी भी पृथ्वी पर जीवित थे। परन्तु न्याय के बाद पृथ्वी पर कोई जीवित नहीं होगा, ज़्योंकि मसीह के आने पर पृथ्वी जल जाएगी (2 पतरस 3:10)। हमें यह पता नहीं चलता है कि मृत्यु के बाद लोग कहां जाते हैं ?

लाज़र की तरह कुछ लोग विश्राम के स्थान पर जाते हैं। इसे स्वर्गलोक कहा जाता है, ज़्योंकि डाकू से यीशु द्वारा कही गई बात के अनुसार, मृत्यु के बाद वह भी वहीं पर गया (लूका 23:43)। परन्तु स्वर्गलोक तो अधोलोक का एक भाग होना चाहिए, ज़्योंकि बाइबल यह भी सिखाती कि यीशु अधोलोक में गया था। पतरस ने कहा कि दाऊद ने "पहिले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यवाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई" (प्रेरितों 2:31)।

धनी आदमी की तरह ही दूसरे लोग भी पीड़ा के एक स्थान में जाते हैं। धनी आदमी के अधोलोक में होने के बारे में भी कहा गया है: "... वह धनवान भी मरा; और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं, ..." (लूका 16:22, 23)।

चैन और पीड़ा दोनों स्थान अधोलोक में कैसे हो सकते हैं ? अधोलोक मृतकों का स्थान है जहां सब मुर्दे जाते हैं चाहे वे धर्मी हों या अधर्मी। इसके दो भाग होते हैं: चैन की जगह और पीड़ा की जगह। स्पष्टतया 2 पतरस 2:4 में पतरस उस पीड़ा के स्थान के अधोलोक की बात कर रहा था जिसमें उसने यूनानी शज़्द *tartarus* का इस्तेमाल किया। यहीं पर हर युग के दुष्टों को दण्ड की प्रतीक्षा के लिए रखा जाता होगा।

हेडिस या अधोलोक में स्वर्गलोक और तरसुस में रहने वाले लोगों के बीच एक बहुत बड़ी खाई है। धनी आदमी ने कहा कि लाज़र को "अपनी अंगुली का सिरा पानी में भिगोकर

मेरी जीभ को ठंडी'' करने के लिए लगा दे (लूका 16:24)। अब्राहाम ने कुछ उज़्र दिया, ''और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुज़्हारे बीच एक भारी गड्ढा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुज़्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके'' (लूका 16:26)। उस खाई को कोई पार नहीं कर सकता। एक बार जब कोई पीड़ा के स्थान में आ जाता है तो उसे वहीं रहना होगा।

मृत्यु के तुरन्त बाद सैमुएल कहां जाएगा? इसका उज़्र यह है कि यह तो इस पर निर्भर करता है कि उसका जीवन कैसा था, जैसे लाज़र और धनवान के जीवन पर निर्भर किया था।

ध्यान दें कि यद्यपि लाज़र के जीवन का वृज़ांत यह प्रमाणित करता है कि इस संसार में सुख विलास के जीवन का अर्थ यह नहीं कि अगले जीवन में भी ऐसा ही होगा। हो सकता है कि आप आज तो बड़े खुशहाल हों, ''प्रतिदिन के जीवन में सुख-विलास से रहते हों;'' परन्तु, परमेश्वर के प्रति अपनी जिज़्मेदारी को नकारने के कारण, हो सकता है कि मृत्यु के तुरन्त बाद उस धनवान की तरह आप भी अपने आप को उस भयानक पीड़ा में पाएं!

मसीह के द्वितीय आगमन के समय सैमुएल

चौथा, सैमुएल के बारे में मसीह के दूसरी बार आने के समय पर विचार करें। मसीह दोबारा आ रहा है! उसके स्वर्गारोहण के कुछ देर बाद ही एक स्वर्गदूत ने कहा था, ''... यही यीशु, जो तुज़्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा'' (प्रेरितों 1:11)। नये नियम के अनुसार उसे किसी भी समय आने से कोई रोक नहीं सकता।

मसीह के वापस आने के समय ज़्या होगा?

जब मसीह दोबारा आएगा, तो सैमुएल और वे सब जो मर गए हैं, जी उठेंगे। यीशु ने कहा, ''... वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शज़्द सुनकर बाहर निकल आएंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे'' (5:28, 29)। धर्मी हों या अधर्मी सब जी उठेंगे और यह सब एक ही समय में होगा।

मसीह के दोबारा आने पर, जो जीवित होंगे वे बदल जाएंगे: ''देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। ... पिछली तुरही फूंकते ही ... मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:51, 52)। पुनरुत्थान के बाद भी, सैमुएल का शरीर होगा परन्तु यह अलग तरह का होगा। यह दूसरी चीज़ों की तरह अविनाशी और आत्मिक होगा (1 कुरिन्थियों 15:42-44)।

मसीह के दोबारा आने पर, यह संसार नष्ट हो जाएगा।

> परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शज़्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे (2 पतरस 3:10)।

संसार सहित, इस संसार की हर वस्तु, यह सृष्टि जिसमें संसार है और वे सब भौतिक वस्तुएं जिनके लिए लोग जीते हैं मसीह के आने पर जल जाएंगी! तो फिर हमें कैसे लोग बनना चाहिए? (2 पतरस 3:11)। निश्चित रूप से हमें ऐसे लोग *नहीं* होना चाहिए जो भौतिक चीज़ों के लिए जीते हों!

न्याय के समय सैमुएल

पांचवां, न्याय के समय सैमुएल की स्थिति पर विचार करें।

मसीह के दोबारा आने पर एक और बात होगी। उस समय न्याय भी होगा।

> ''जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियां उसके सामने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा'' (मज़ी 25:31, 32)।

न्याय के विषय में बहुत से प्रश्नों का उज़र दिया जाना आवश्यक है:

न्याय किसका होगा? सब का! यूहन्ना ने कहा, ''... उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया'' (प्रकाशितवाज़्य 20:13; तु. रोमियों 14:10-12)। हमें अच्छा लगे या नहीं, हम उसके लिए तैयार हों या न, पर न्याय तो सबका होगा! यह एक ऐसी बात है जो हम सब के लिए ठहराई गई है (इब्रानियों 9:27)।

न्याय कौन करेगा? परमेश्वर ''उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है'' (प्रेरितों 17:31)।

न्याय किस आधार पर होगा? हमारा उद्धार होना या नाश होना इस पर आधारित होगा कि हम मसीह के लहू में धोए गए हैं या नहीं (प्रकाशितवाज़्य 7:14)। इसके अलावा, न्याय के लिए नया नियम दो आधार बताता है। एक, हमारा न्याय मसीह के वचन के द्वारा होगा। यीशु ने कहा, ''... जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)। दूसरा हमारा न्याय हमारे कामों से होगा। ''... हर एक व्यज़्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10; तु. प्रकाशितवाज़्य 20:12, 13; सभोपदेशक 12:14)। ये दो बातें कैसे होंगी? हमारा न्याय मसीह के वचन से हमारे कामों के अनुसार होगा, जिसमें हमने अपने कामों से उसकी बातों को माना हो या न।

तो फिर न्याय के समय सैमुएल का ज़्या न्याय होगा? वह न्याय वास्तव में हर रोज उन कामों के द्वारा लिखा जा रहा है जिसे सैमुएल हर रोज करता है। ज़्योंकि सैमुएल का न्याय इस आधार पर होगा कि उसने मसीह की इच्छा को माना है या नहीं, उसके प्रभु की आज्ञा को मानने या न मानने से तय होगा कि न्याय के दिन उसका उद्धार होगा या नाश। सो

आपका और मेरा न्याय भी ऐसे ही होगा। हम अब इस बात का निर्णय ले रहे हैं कि न्याय के समय हम निर्दोष ठहरेंगे या दोषी, जो इस आधार पर होगा कि प्रतिदिन के जीवन में हम मसीह की बात मान रहे हैं या नहीं।

सैमुएल अनन्तकाल में

छठा, सैमुएल के अनन्तकाल में होने पर विचार करें।

सैमुएल को अनन्तकाल तक कहां रहने की जगह मिल सकती है? मज़ी 25:46 कहता है, "और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"

सैमुएल और हमारे लिए केवल दो ही सज़्भावनाएं हैं: अनन्तकाल का दण्ड अर्थात नरक या अनन्तकाल का जीवन अर्थात स्वर्ग। ध्यान दें कि मज़ी 25:46 में दो समानताएं हैं; हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि दोनों ही वास्तविक और सदा तक रहने वाली हैं। यदि स्वर्ग अनन्तकाल तक रहेगा तो नरक का भी अन्त नहीं होगा।

ज़्या स्वर्ग सचमुच है? 1969 में *सिडनी मॉर्निंग हैरल्ड* में "इज़ देयर ए हैवन?" शीर्षक से एक लेख छपा। इसमें "पृथ्वी के संक्षिप्त सर्वेक्षण" के परिणामों को उद्धृत किया गया जिनमें स्वर्ग के बारे में कई लोगों के विचार दिए गए थे।

> ... एक मानवतावादी ने कहा, "हम स्वर्ग और नरक के विचार को नकारते हैं। नरक के विचार को हम एक क्रूर धारणा मानते हैं।" ... एक रज़्बी [ने कहा] कि स्वर्ग केवल एक आत्मिक विचार है। एक मूर्तिकार ने कहा कि वह इस विचार से संतुष्ट है कि एक दिन वह विस्मृति में घूमेगा, पर उसे किसी और निश्चित बात की ओर जाने की आशा थी। ... और unidentified flying object Invstigation centre के प्रेजिडेंट का अवलोकन था कि स्वर्ग और नरक मनुष्य की कल्पना से बनाए गए हैं, परन्तु अन्तरिक्ष में इससे अधिक विकसित संसार हो सकता है।

लोग जो भी सोचते हों पर बाइबल यह सिखाती है कि स्वर्ग है और यह बात विशेष है।

ज़्या नरक सचमुच में है? कुछ लोग इस विचार पर कि नरक एक अनन्तकालिक दण्ड है, आपज़ि करते हैं। उनका मानना है कि नरक तो केवल एक क्षण की बात है जो सदा तक नहीं रहती। उनके अनुसार दुष्ट लोगों का नाश ही होता है अर्थात उनका अस्तित्व मिट जाता है। पर बाइबल यह नहीं सिखाती कि दुष्ट लोगों का अस्तित्व मिट जाएगा। प्रकाशितवाज़्य 14:11 कहता है, "और उनकी पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा ... उन को रात दिन चैन न मिलेगा" (प्रकाशितवाज़्य 14:11)।

कोई आपज़ि करता है, "यह तो बड़ी क्रूर बात है। लोग दूसरे लोगों को पीड़ा नहीं देते। निश्चय ही परमेश्वर भी उसे और उसके वचन को नकारने वालों को पीड़ा नहीं देगा।" फिर से विचार करें: परमेश्वर दुष्ट लोगों को दण्ड ज़्यों नहीं देता? उन्होंने भले परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। उन्होंने उनकी ओर से दिए गए बलिदान को तुच्छ जाना है। उन्होंने जीवन भर

उसका विद्रोह किया है। उन्होंने उद्धार पाने के हर अवसर को नकारा है। उन्होंने न मिटने वाला पाप किया है, जो अनादि परमेश्वर के विरुद्ध है और इस कारण उन्हें न खत्म होने वाला दण्ड मिलना ही चाहिए।

नरक कैसा है ? नया नियम नरक का (अन्य चीज़ों के साथ) वर्णन आग की एक झील (प्रकाशितवाज़्य 20:15), आग के कुंड और रोने और दांत पीसने के स्थान (मज़्ी 13:42), पीड़ा के स्थान (लूका 16:23), बाहर के अंधकार के स्थान (मज़्ी 8:12), न्याय के लिए पुकारते लोगों के स्थान (लूका 16:24), अनन्त दण्ड के स्थान (मज़्ी 25:46), शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार जगह (मज़्ी 25:42) और गंधक से पीड़ित होने के स्थान (प्रकाशितवाज़्य 21:8) के रूप में करता है।

अनन्तकाल तक सैमुएल कहां रहेगा ? स्पष्टत: या तो वह स्वर्ग में होगा या नरक में। इनमें से किसी भी जगह में रहना उस पर निर्भर करता है। यदि वह मसीह के सुसमाचार की आज्ञा मानकर मसीह के लहू के द्वारा उद्धार को स्वीकार कर लेता है और अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की खोज में लगा लेता है, तो अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में उसका जाना पज़्का हो सकता है। पर यदि वह पाप में और केवल अपने लिए ही जीवन बिताता है, तो निश्चित रूप से वह नाश होगा और अनन्तकाल में नरक में जाएगा।

सारांश

आपसे एक और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा जा सकता है: *अनन्तकाल तक के लिए आप कहां रहेंगे ?* केवल दो ही सज़्भावनाएं हैं: या तो स्वर्ग में या फिर नरक में। तीसरा कोई विकल्प नहीं है। उसके आगे हम आपके भविष्य के बारे में वही कह सकते हैं जो सैमुएल के बारे में कहा गया है कि यह तो आप पर निर्भर है। आप ही तय कर सकते हैं कि आप कहां रहेंगे।

यदि आपने सुसमाचार की आज्ञा मानकर मसीह के लहू के द्वारा उद्धार पा लिया है, और आप अपना जीवन उसकी इच्छा पूरी करने के लिए बिताते हैं, तो आप यकीन से कह सकते हैं कि आप अनन्तकाल या सदा के लिए स्वर्ग में ही जाएंगे। पर यदि आप पाप में बने रहते हैं, तो आपका नाश होना और सदा के लिए नरक में जाना तय है। स्वर्ग में जाना या नरक में जाना सब जीवित रहते हुए ही तय किया जा सकता है उसके बाद कुछ नहीं हो सकता!

एक रात स्वप्न में, मैं कड़ी सर्दी में जंगल में एक निर्जन मार्ग पर कार चला रहा था। रास्ते में कंटीली झाड़ी के पास आकर मैंने कार बांयें को मोड़ी और चलता रहा। रास्ता तंग से तंग और कठिन से कठिन होता जा रहा था और अन्त में बिल्कुल बन्द हो गया। स्वप्न में मैंने देखा कि मैं पीछे मुड़ा और अन्त में रास्ते में उसी झाड़ी की ओर चला गया। अचानक, *मुझे पता नहीं चल रहा था कि मैं कहां हूं और कहां जा रहा हूं।* मैं पूरी तरह से घबरा गया। यह एक बड़ा ही डरावना और भयभीत करने वाला अनुभव था। मैं उठ गया पर स्वप्न को नहीं भूल पाया।

बहुत से लोग *यहां* के बारे में पहले से मन बनाए रखते हैं कि *यहां के बाद* के लिए कुछ विचार नहीं करते। वे *इस जीवन* के बारे में इतना सोचते हैं कि उन्हें *इसके बाद के जीवन* पर विचार करने का समय ही नहीं मिलता। *समय* पर वे इतना ध्यान देते हैं कि *अनन्तकाल* की कोई परवाह ही नहीं करते। *वे सचमुच नहीं जानते कि वे कहां हैं या कहां जा रहे हैं!*

यदि आप पर यही बात लागू होती है, तो जो कुछ आप आज कर रहे हैं उसके अनन्तकालिक परिणामों पर ध्यान से विचार करें। इस बात को सुनिश्चित करें कि आपका जीवन ऐसा होना चाहिए कि आप *जान सकें* कि आप स्वर्ग की ओर जा रहे हैं!

पाद टिप्पणी

[1] *कम्पलीट लैक्चर्स ऑफ़ आर. जी. इंगरसॉल* (शिकागो: जे. रेगन एण्ड कं., पृ. न.), 60.